1

"विमर्श पारिजात:"

श्री रामचन्द्र राजानक रचित:"

ॐ श्री सद्गुरवे नम: । ओंकारेणाकलित परमानन्दात्
सन्दोह: श्रीमो विश्वोत्तीर्ण: सकल जगतां सृष्टि संहार शील: ।।
आहृत: स्वं प्रथयति वपुर्मुक्त यो योगिनां य स्तं निर्बोधा-
मृत: सन्निधिं शम्भुमाद्यं नमामि ।।१।।

प्रकाशानन्दात्मा परमेश्वर-
श्चिन्मयनेमु: शिवादि भूम्यन्तं बहुविधतमन्तं जगदिदम् स्व-
स्वातन्त्र्या चित्रे खचित वैभवानन्द रचिक: सदा हृद्यवाधितैः
पीड्यते नित्यं विजायते ।।२।।

यद्ध्यानतो वैश्वरूपमिदं सुर-
मिदं यन्निन्तनेनैव सुरेश वैभवम् । यत्नं सहस्रनाम समस्त
क्रिद्यमन्तर्गायते तं सततं भजे शिवम् ।।३।।

यद्धानन्दं सर्व कलङ्क मोचनं
यन्नाममात्र स्मरणे भयापहम् यत्कीर्तनं सर्व कलङ्क-
मोचनं यन्नाममात्र स्मरणे भयापहम् । यत्कीर्तनं दुष्कृत-
भास्करायानं भजे हृद भजे सततं तु नित्ये ।।४।।

अनिर्यन्त्रित स्वातन्त्र्य विश्वरूप
प्रथामयीम् वन्दे देवातां नित्यं चिद्रूपानन्द शालिनीम् ।।५।।

ऐहि कश्च त्रिके स्ते स्ते विमर्वे: किं प्रयोजनम्
महायामान्निधिां शक्तिं शाङ्करीं नौम्यहं सदा ।।६।।

हृदय स्था परा शक्ति: सर्वगा नित्या निर्मला
अनाकलित स्वातन्त्र्य महिमा शालिनी ।।७।।

इष्ट देवी महादेवादभिन्ना स्मार्क मौक्ष्रौ समावेशात्प्रियं
पूर्णा विद्याध्यानमम श्रेयसे ।।८।।

विद्योम भासुर स्वरूप मनन्त वैभवं
ब्रह्मादि कारण त्रियं जगत: पति परम सत्याादि भेदगुण धार्म-
कलङ्क वर्जितं नमामि देवामेश शेष भेदतो निशाम ।।९।।

निर्व्योऽदित निजानन्द शक्ति चक्र विना-
यकम् गणेश्वरं भजेदेवं विघ्न सन्दोह शान्तये ।।१०।।

परिहृत भवतापः शोभित इव श्रीमिन्दुः मल निवहप्रबन्ध-
विघ्नमोहान्धकारं समहृत्तु गणेशः स विद्वो (संविड्ढाका
प्रकाशाम्) भास यन्त ॥११॥

विद्युल्लिलासमसदृशीकृत ज्ञुति-
स्वरूपं स्वेच्छोदयं पराद्धृदय व्योमनि प्रकटनमणाश्रयेन -
यावत् तीव्रप्रमादपूर्णं भजे गणेशं समुद्भव निश्चयमन्तः॥१२॥

पूर्णेन्दु शीतल श्रीविजयमनन्त-
धान भावाश्रय चित्प्रथात्मकम् मन्तापदहनं मनगेडुं मुक्तरेषु
मिन्दुं नित्यं भजामि वदृषं च सुखच्छै ॥१३॥

सूर्येन्दु वह्निनयनं विनमा सतां
लोकत्रिनयनं स्थितं सहृतौ हेतु मता मा निजमुद्गार-
ज्वलनेन विराजमानां ज्वालां प्रकाशयन्तीं हृदि संश्रयामि
॥१४॥

यस्याज्ञानेनाखिल प्रकाश याति इदं निखिलं दीप्तां अखिल-
मतां सहित इह तत्त्व । भावातीतं शिवकृते भिन्न निष्ठां वदे
देवी चित्कलां विलक्षणीम् ॥१५॥

~~क्लिपिके~~ नृतमिला मिला याहिं इद व्यापीभूतं कुंड
यस्य ज्योतिरिच्छया स्फुरता ज्वालां चिन्दग्निं भजे ॥१६॥

उदान वह्नि नयनां प्रकाशानन्द शालिनीम् ~~उन्मेष~~
~~देवता चक्रनायिका~~ मिटि शातर अशेष देवता चक्रनायिका
चिन्तये परम ॥१७॥

विचित्र रूप याता मन्त्रिन्त्य रूपां भवसन्ताप हरा-
मनादि महिमम् । प्रतिभा बोध मयी मानन्द वीर्यां हृदये प्रहृत
स्वरूप इयामन्तो ॥१८॥

ज्वलन नयन ध्वान्त ध्वंसनानन्ततीव्र
प्रकृति रुचि पूर्णा चिदुद्यानन्द लेखा वहन्त शुभतो शर्मदि-
तस्यान्तर लेख्यमवद्यन्त कलङ्क दुर्भाग्यदहन ज्वाला ॥१९॥

दुर्वासा वो यादि विनट पाशाः सद्यस्त्वमायं
विमर्श अभिहन्य शिवाद्वय शासने व्याप्त बोध्यपद दान हृद
धाम वासिवलासमलं विभिः सत्तं यत्प्रभवो इक्षिनव नमाइ
भजे ॥२०॥

श्रीसोमानन्द कृपया शत्याभिज्ञात शिवद्दम् उत्पलाख्यं
वन्दे शिवदृष्टि मयं सदुरुम् ॥२१॥

शैवागमाब्धेः सकलात् पूर्णं विज्ञान चित्तामणिमर्थ्यगर्भम्
विवेक मन्दारनिधिन्द्र शान्तितो इयात् महं आनन्दनत:
||२३||
योगेन्द्र नाथ लिति वैभव चक्रवर्ती स्वामी जयत्यधगुरुः
सतत स्वहस्त: योऽहं निवतु शिव शासन सारयानाद्धयात्
परमार्थ फल मशेषम् ||२४||
योगेन लब्ध सततोदित ब्रोम
धाम: स्वच्छात्म स्वप्रकाश परमार्थ प्रकाश पूर्णः श्रीब्रह्मनन्द
प्रबोध प्रवृत्ति रत्यात: श्रीमतनोतु परमं ममशुद्ध मानस: ||२५||
अन्ये ये गुरुवरा: परमार्थ मार्गा-
नाक्रमेण प्रकटीकृत बोधमार्गा: | तत्पाद पङ्कज द्वन्द्व समाश्रयेण
स्वस्थं सदा स्यमेव मम केवल मत्र भूयात् ||२६||
आनन्द निजात्म विलास पूर्ण स्यानन्द-
सन्दोह सुधा सवार्णवम् अशेष वैश्वात्म्य प्रथामय पश्रीमद्गुरु
सन्तत मात्र ध्यामि यह्म ||२७||
प्राणापान इच्छा विराम विनमह्निलके
परे धामनि यो नित्यं भाति शिवाद्वय ज्ञानात्मलक्ष्मी-
मय: श्रीरामं शिव शासना गम विं इशवर निर्मल स्वात्मा तक
तथ्य मिश्रमति वन्दे इच्छा नमः ||२८||

1

"विमर्श पारिजात:"

श्री रामचन्द्र राजानक रचित:"

ॐ श्री सद्गुरवे नम: । अों कारणाकलित परमानन्द
सन्दोह लेपी विश्रान्तिण: सकल जगतां सृष्टि संहार शील:।
आहूत: स्वं प्रयाति वशमुपित यो योगिनां य स्तं चिदोघा-
मृत · सन्निधिं शम्भुमाद्यं नमामि ॥१॥

प्रकाशानन्दात्मा परमेश्वर-
श्रीमयनेमु: शिवादि भूम्यन्तं बहुविधलसन्तं जगदिदम् स्व-
स्वातन्त्र्याच्छित्ते खचितवैभवान् ददाति क: सद्वा हृदयवासिते
विहरति नित्यं विजायते ॥२॥

यद्ध्यानतो वेद्य मुक्तमिदं सुर-
मिदं यच्चिन्तनेनैव सुरेशवैभवम् । यत्कोर्तिनाम समस्त
किल्बिष सन्तृणायते तं सततं भजे शिवम् ॥३॥

यद्धानन्दं सर्व कलङ्क मोचनं
यन्नाममात्र स्मरणं मयावहम यत्कीर्तनं सर्व कलङ्क-
मोचनं यन्नाममात्र स्मरणं भयापहम् । यत्कीर्तनं दुष्कृत-
भारनाशनं भजे हृद्भजे सततं तु निजे ॥४॥

अनियन्त्रित स्वातन्त्र्य विश्वेश्वर
प्रथा मयीम् वन्दे देवतां नित्यं चिदानन्द शालिनीम् ॥५॥

ऐहि कश्चित्रिके स्ते स्ते निगमै: किं प्रयोजनम्
महत्पामतिपतां शक्तिं शाङ्करीं नौम्यहं सदा ॥६॥

हृदय स्था परा शक्ति: सर्वगा नित्या निर्मला
अनाकलित स्वातन्त्र्य महिमा शालिनी ॥७॥

इष्ट देवी महादेवादभिन्ना स्मारक पीयूष समावेशात्रियं
पूर्णां विदधान्मम श्रेयसे ॥८॥

चिद्व्योम भासुर विग्रह मनन्त वैभवं
ब्रह्मादि कारण त्रियं जगत: पतिं परम् सत्यादि षड्गुण धर्म-
कलङ्क वर्जितं नमामि नेत्राम शेष भेदतो निशाम ॥९॥

नित्योदित निजानन्द शक्ति चक्र विना-

𑇄 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆱𑆢𑇀𑆓𑆶𑆫𑆮𑆼𑆤𑆩𑆂 [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥𑇑॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥𑇒॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥𑇓॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥𑇔॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ष्टा भूद्भूतः सैषा पातु पशून् वागनल्पाभिन्नभूर्वैखरान्
॥३५॥ एवं भवद्दियं भक्त्या [illegible] स्तुतिः [illegible]
[illegible] ॥३६॥ स्तुत्वा नयना
[illegible] विविधवि
[illegible]
[illegible] ॥३७॥ इति श्री
[illegible]॥ ० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ २ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥३॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥५॥ [illegible]
[illegible]
॥६॥ [illegible]
[illegible] ॥७॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ९ ॥
[illegible]
[illegible] ॥१०॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

93

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

33

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तद्विशुक्लस्तु केवली।

सोऽहमितिमेहेतस्तु कर्मात्मा।

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]